अन्तरा-शब्दशक्ति

संस्मरण संग्रह

मेरी थाई यात्रा

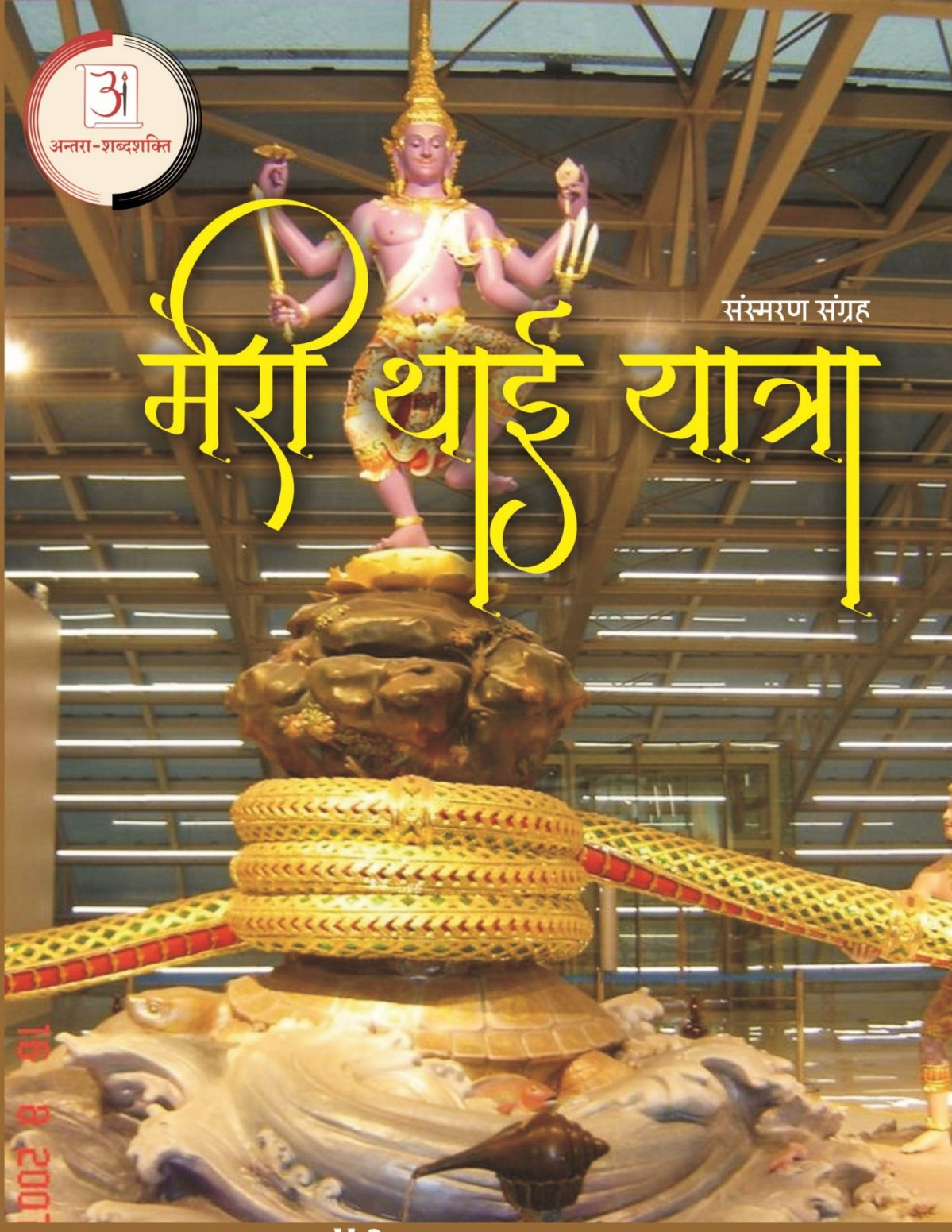

डॉ चेतना उपाध्याय

मेरी थाई यात्रा

(यात्रा संस्मरण)

डॉ. चेतना उपाध्याय

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- "978-93-86666-76-5"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshakti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com
प्रथम संस्करण २०१९ डॉ. चेतना उपाध्याय
मूल्य - ६०.०० रुपये
आवरण चित्र- संदीप सोनी,वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
MERI THAI YATRA BY DR. CHETANA UPADHYAY
वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

मेरी थाई यात्रा

वैश्विक साहित्यक एवं सांस्कृतिक संस्था छत्तीसगढ़ मित्र रायपुर द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय सा.सा. सम्मेलन में वार्ता हेतु आमंत्रण प्राप्त हुआ। एक स्वाभाविक खुशी जेहन में स्वतः ही स्फूर्त हो गई। कार्यक्रम 2 से 7 जून, 2017 में क्राबी महोत्सव रूप में क्राबी आयरलैण्ड थाईलैण्ड में था। विषय भी रूचिकर और जगह भी विश्व के मानचित्र पर विशिष्ट पहचान रखने वाली। अहा मज़ा आ गया। पतिदेव को पूछा तो वे भी तुरंत तैयार हो गए। इसे कहते हैं - सोने पे सुहागा। मन खुशी से झूम उठा। हाथों ने कागज कलम उठा उक्त विषय पर अपनी यात्रा प्रारम्भ कर दी। पारिवारिक आज्ञा पश्चात् सरकारी नौकर होने के नाते राज्य शिक्षा विभाग से अनुमति अत्यावश्यक थी। निर्धारित प्रारूप में प्रक्रिया प्रारम्भ हुई, प्रथम पायदान पर नाको चने चबाने पड़े। आखिर निरंतर रचनात्मक कार्यों में व्यस्त रहने से चापलूसी की आदत जो न थीं, उसका खामियाजा तो भुगताना ही था। खैर दुनिया में भले लोगों की कमी अवश्य है, मगर खात्मा तो नहीं हुआ है। कुछ मददगार हाथ आगे आए और यह आज्ञा भी समय पर प्राप्त हो गई।

कपड़ों का बैग जमाते वक्त कुछ लोगों ने टोका अरे रे... यह क्या इतने सारे..? वहाँ थाईलैण्ड में तो इनकी कोई जरूरत ही नहीं, कहकर वे ठहाका मार हंस पड़े। हंसी थमी, तो बोले, वहाँ कपड़ों का लबादा लादने की जरूरत ही नहीं है। एश ही एश हैं वहाँ तो, पता कर लेना किसी से भी हम तो वहाँ पिछले वर्ष ही होकर आए हैं। इस तरह उन्होंने अपना अनुभव और पूर्वज्ञान हमें परोसा। जिसने मुझे थोड़ा विचलित तो किया पर अधिक नहीं, क्योंकि यह तो उनकी व्यक्तिगत सोच है। ऐसी ही कुछ-कुछ सोच कुछ हिन्दुस्तानियों में गोवा को लेकर भी है। मैं लगभग 8 दिवस तक पूर्व में वहाँ के प्राकृतिक एवं सामाजिक सौन्दर्य का दर्शन कर

अभिभूत हो चुकी हूँ। अतः मुझे अपनी व्यक्तिगत सोच साहित्यिक व सांस्कृतिक गरिमा का आदान-प्रदान विश्व पटल पर राष्ट्रभाषा हिन्दी का परचम लहराने पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। फिर थाईलैण्ड की प्राकृतिक खूबसूरती उसका नैसर्गिक सौंदर्य भी तो अनूठा है, वह भी तो सहज आकर्षण का केन्द्र है। यह सच है, कि हमारे नेत्रों पर जिस रंग का चश्मा चढ़ा होता है। प्रकृति हमें उसी रंग में रंगी दिखाई देती है। यह भी एक सहज स्वाभाविक प्रक्रिया है, जो कि यों ही निरंतर अपनी छटा बिखरेती रहने वाली है। खैर..

इस यात्रा का प्रारम्भ अजमेर से राजधानी ट्रेन द्वारा राजधानी दिल्ली को हुआ। वहाँ से मेट्रो द्वारा हम इन्दिरा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा पहुँचे जहाँ से चैकिंग की अनिवार्यताऐं पूरी कर हमने थाई एयरवेज द्वारा बैंकॉक को उड़ान भरी। धीरे-धीरे ऊपर उठते हुए विमान के साथ स्वयं भी बादलों का सीना चीर बादलों को धरती के पास नीचे छोड़ ऊपर उड़ना एक गुदगुदी भरी सिहरन सी पैदा कर रहा था। बचपन में धरती से जब आकाश को देखती थी, तब लगता था, हमें बड़े होकर आकाश को छूना है। बादलों के बीच अठखेलियाँ करने को पहुँचना है। पता ही न था, तब कि बादल इतने करीब हैं हमारे। बादलों से इतनी करीबी तो कभी महसूस ही नहीं हुई। अरे नहीं नहीं कुछ समय पूर्व मेघालय असम गए थे, तब भी वहाँ प्रकृति का यह खूबसूरत नज़ारा देखने को मिला था। वहाँ भी बादलों को पैरों की तरफ से उमड़ते-घुमड़ते देखा था। मगर उसे मैने दृष्टिभ्रम के रूप में स्वीकार किया था, कि अनायास ही खामोशी फिल्म के गीत की पंक्तियाँ याद आ कर रोमांचित कर गई। आज मैं ऊपर आस्मां नीचे, आज मैं आगे, जमाना है पीछे।

इतने में बड़ी खूबसूरत सी ड्रेस पहने विमान परिचारिका जिसके हाथ में व्यवस्थित सी ट्राली भी थी। जिस पर बहुत सारी रंग बिरंगी छोटी-बड़ी बोतलें भी थीं। मेरे आगे वाली पंक्ति में बैठे

लोगों ने बड़ी सहजता से आर्डर किया। रम, बीयर, रेड वाईन और भी न जाने क्या-क्या। मुझे एक बार तो इन दुकानों के आस-पास सड़कों पर दिखने वाले नजारों ने दृश्यावलोकन करवाया, जिससे एक बार मैं घबरा गई। फिर अपनी घबराहट पर नियंत्रण कर आँखे भींच सोने का उपक्रम किया इतने में ट्राली लिए वह युवती मेरे सम्मुख आ खड़ी हुई। मैंने उसे अनदेखा सा किया। परिचारिका मेरे चहेरे के भावों को ताड़ चुकी थी शायद, तभी तो आगे बढ़ों के, मेरे इशारे पर भी वह आगे न बढ़ी, मेम ऑरेंज, एप्पल, पाइनेपल, गुआवा ज्यूस? प्लीज मेम, उसने दुबारा बोलना प्रारम्भ किया तो उसके सुर में सुर मिलाते हुए ऑरेंज ज्यूस मैं भी कह गई। ज्यूस के साथ ही स्वादिष्ट नाश्ता भी पेश किया गया, अच्छा लगा। मुझे उनका शालीन व्यवहार व शालिन परिधान भी प्रभावित कर गया, पूरी आस्तीन की कमीज व लूंगीनुमा स्कर्ट जिस पर चुन्नी को भी विशेष तरीके से सहेजा गया था, अच्छा लगा। पेट को आधार मिलते ही नेत्र कुछ मुंद से गए। कुछ ही समय में अनाउंसमेंट हुआ कमर बेल्ट को ठीक से बाँध कर सीधे बैठिए। हम सुवर्ण भूमि एयरपोर्ट बैंकांक पहुँचने वाले हैं।

बेहद खूबसूरत, सुव्यवस्थित, विशालकाय एयरपोर्ट को देखते ही आँखें कुछ चुंधियाँ सी गई। वहाँ पता चला कि यह विश्व में दूसरे सबसे बड़े एयरपोर्ट में स्थान रखता है। फिर उसके नाम सुवर्ण भूमि में भी कुछ अपनत्व का आभास मिला, हम तो अपनी हिन्दुस्तानी धरा को सुवर्णभूमि मानते हैं। इतने में ही बड़े सुंदर दृश्य पर नजर पड़ी वह समुद्र मंथन का दृश्य था, बड़ा सा कलश जिस पर नागराज लिपटे हुए, नाग को एक सिरे पर दैव, दूजे पर दानव पकड़कर समुद्र मंथन करते हुए। कलश के ऊपर त्रिदेव का आभास हुआ।

नयनाभिराम दृश्य जिसके बारे में दादी-नानी से सुना भर था। विहंगम दृश्य यहाँ विदेशी (थाई) धरा पर देखने को मिला।

फिर तो इस धरा को करीब से जानने का कौतुहल जाग गया। क्योंकि यहाँ हिन्दुस्तान में पौराणिक कथाओं में इसका जिक्र कुछ इस प्रकार है, कि देवों और असुरों ने एक बार अमृत प्राप्ति हेतु समुद्र मंथन किया था। इसके लिए रस्सी के रूप में वासु कि नाग, मथानी के लिए सुमेरू पर्वत का प्रयोग किया था। नाग के फन की तरफ असुर और पूछ की तरफ देवता थे। मथानी को स्थिर रखने के लिये कच्छप के रूप में विष्णु थे। और यह ज्यों का त्यों दृश्य यहाँ विदेशी धरा (थाईलैण्ड) पर दृष्टिगोचर हुआ।

हिन्दुस्तान में दादी जी से रामायण कथा सुनी थी, जिसमें राजा रामचन्द्र जी के दो पुत्र लव और कुश हुए थे, जिन्होंने अश्वमेघ यज्ञ किया था। आश्रम में जनम व पालन पोषण होने के कारण वे अपने पिता श्री रामचन्द्र जी से इस दौरान ही मिले थे। फिर आगे या तो उन्होंने कहा नहीं अथवा हमने सुना/पढ़ा नहीं। खैर, हकीकत जो कुछ भी हो। यहाँ इस विशिष्ट स्वर्णभूमि पर जो कुछ भी जाना व रोमांचित कर देने वाला था। अतः वह जानकारी आप से भी बांट रही हूँ।

यहाँ थाईलैण्ड में आज भी संवैधानिक रूप में रामराज्य है। कारण कि श्री रामचन्द्र जी के बड़े पुत्र कुश के वंशज सम्राट ''भूमिबल अतुल्य तेज'' जिन्हें नौवां राम कहा जाता है, के पुत्र राज कर रहे हैं। भूमिबल अतुल्य तेज का 13 अक्टूबर 2016 को 88 वर्ष की आयु में निधन हो गया था। फिर आपके पुत्र श्री ''वजीरालौंगकोर्न'' 16 अक्टूबर 2016 को 64 वर्ष की आयु में थाईलैण्ड के राजा बने। लेकिन राजगद्दी पर अपने पिता के निधन के 50 दिवसीय (सवा माह) शोक के पश्चात् दिसम्बर 01, 2016 को आसीन हुए इन्हें राम दशम की उपाधि से अलंकृत किया गया अर्थात् यहाँ हकीकत में रामराज्य है।

अलंकरण के दौरान बताया गया कि आपको ''महामहीम राजा महा वजीरालोंगकोर्न बोडिन्द्रदेव यव रंगकुन'' के रूप में

अधिकारिक तौर पर जाना जाएगा। जन्म के समय इनका पहला नाम था। ''वजीरा लोंग कोर्न बोरोम मचक क्रयादिसवसंतत्ती ओंक ठेवेत्थम रोंग सुबोरीबा आफिक्हन पर कण महित्तलडूंलादेत पहुमी पहाने नरेतवारांग कुनकित्ती सिरिसोम बूनसवंग कहावत बोरोम मखत्तियरत चकमण। इसे समझने हेतु यहाँ जरूरी है कि हम भगवान श्री राम का संक्षिप्त इतिहास एक नजर में देखने भर का प्रयास मात्र करें।''

वाल्मिकी रामायण एक धार्मिक ग्रन्थ होने के साथ एक ऐतिहासिक ग्रन्थ भी है। क्योंकि महर्षि वाल्मिकी राम के समकालीन थे। रामायण के बालकाण्ड के सर्ग 70, 71, व 73 में राम और उनके तीनों भाईयों के विवाह का वर्णन है। जिसका सारांश है-मिथिला के राजा सीरध्वज थे, जिन्हें लोग विदेह भी कहते थे। उनकी पत्नी का नाम सुनेत्रा (सुनयना) था, जिनकी पुत्री सीता जी थी। जिनका विवाह राम से हुआ था। राजा जनक के कुशध्वज नाम के भाई थे। इनकी राजधानी सांकाश्य नगर थी, जो इक्षुमति नदी के किनारे थी। इन्होंने अपनी बेटी उर्मिला लक्ष्मण से, मांडवी भरत से और श्रुतिकीर्ति का विवाह शत्रुघ्न से करवाया था।

केशवदास रचित 'रामचन्द्रिका' पृष्ठ 354 (प्रकाशन संवत 1715) के अनुसार राम और सीता के पुत्र लव और कुश, लक्ष्मण और उर्मिला के पुत्र अंगद और चन्द्रकेतु, भरत और मांडवी के पुत्र पुष्कर और तक्ष, शत्रुघ्न और श्रुतिकीर्ति के पुत्र सुबाहु और शत्रुघात हुए थे। भगवान राम के समय ही राज्यों का बंटवारा इस प्रकार हुआ था- पश्चिम में लव को लवपुर (लाहौर) पूर्व में कुश को कुशावर्ती, तक्ष को तक्षशिला, अंगद को अंगद नगर, चन्द्रकेतु को चन्द्रावति।

कुश ने अपना राज्य पूर्व की तरफ फैलाया आप हिन्दु धर्म को मानते हुए भी बौद्ध अनुयायी रहे। आपने वहीं नागवंशी कन्या से विवाह किया था। थाईलैण्ड के राजा उसी कुश के वंशज हैं। इस

वंश को चक्री वंश कहा जाता है। चूंकि राम को विष्णु का अवतार माना जाता है, और भगवान विष्णु की आयुध चक्र है, इसीलिए थाईलैण्ड के लोग चक्री वंश के हर राजा को ''राम'' की उपाधि देकर नाम के साथ संख्या दे देते हैं। जैसे यहाँ 2017 में दशम राजा राम का राज्य है।

वर्तमान में लोग थाईलैण्ड की अयोध्या (राजधानी) को बैंगकॉक (ठंदहावा) कहते हैं, क्योंकि इसका सरकारी नाम इतना बड़ा है, कि इसे विश्व का सबसे बड़ा नाम माना जाता है। इसका नाम पाली व संस्कृत शब्दों से मिलकर बना है। देवनागरी लिपि में पूरा नाम इस प्रकार है- ''क्रुंगदेव महानगर अमर रत्न कोसिन्द्र महन्द्रियुध्या महातिलक भव नवरत्न रजधानी पुरी रम्य उत्तम राज निवेशन महास्थान अमर विमावन अवतावर स्थित शक्रदत्तिय विष्णु कर्म प्रसिद्धि।''

थाई भाषा में इस पूरे नाम में कुल 163 अक्षरों का प्रयोग किया गया है। इस नाम की एक और विशेषता है। इसे बोला नहीं गाकर कहा जाता है। कुछ लोग आसानी के लिए इसे ''महेन्द्र अयोध्या'' भी कहते हैं। अर्थात् इन्द्र द्वारा निर्मित महान अयोध्या, थाईलैण्ड के जितने भी ''राजा'' राम हुए हैं। सभी इसी अयोध्या में रहते आए हैं। वास्तव में देखा जाए तो, असली राम राज्य थाईलैण्ड में है। बौद्ध अनुयायी होने के बावजूद थाईलैण्ड के लोग अपने राजा को राम का वंशज होने से विष्णु का अवतार मानते हैं। यहाँ के राजा प्रभु श्री राम का वंशज होने से यहाँ का राज्य राम राज्य कहलाता है। थाईलैण्ड में संवैधानिक लोकतंत्र की स्थापना 1932 में हुई।

भगवान राम के वंशजों की यह स्थिति है, कि उन्हें निजी अथवा सार्वजनिक तौर पर कभी भी विवाद या आलोचना के घेरे में नहीं लाया जा सकता है। वे पूजनीय है। थाई शाही परिवार के सदस्यों के सम्मुख थाई जनता उनके सम्मानार्थ सीधे खड़ी नहीं हो

सकती है। बल्कि उन्हें झुक कर खडे होना पड़ता है। उनकी तीन पुत्रियों में से एक हिन्दु धर्म की मर्मज्ञ मानी जाती है।

रामायण थाईलैण्ड के राष्ट्रीय ग्रन्थ के रूप में स्वीकार्य है। यद्यपि थाईलैण्ड में थेरावाद बौद्ध धर्म के अनुयायी बहुसंख्यक है। इसके बावजूद भी रामायण को राष्ट्रीय ग्रन्थ रूप में मान्यता प्राप्त है। इसे थाई भाषा में राम कियेन कहते हैं। इसका अर्थ रामकीर्ति होता है, जो वाल्मिकी रामायण पर आधारित है। इस ग्रन्थ की मूल प्रति सन् 1767 में नष्ट हो गई थी, जिससे चक्री राजा प्रथम राम (1736/1809) ने अपनी स्मरण शक्ति से पुनः लिखा था। थाईलैण्ड में रामायण को राष्ट्रीय ग्रन्थ घोषित करना इसलिए संभव हुआ, कि यहाँ हिन्दु धर्म मान्य है। थाईलैण्ड में राम कियेन पर आधारित नाटक और कठपुतलियों का प्रदर्शन देखना धार्मिक कार्य माना जाता है। राम कियेन के मुख्य पात्रों के नाम इस प्रकार हैं।

राम(राम), फ्रलक(लक्ष्मण), पाली(बाली), सुक्रीप (सुग्रीव), ओन्कोट(अंगद), खोम्पून (जाम्बवन्त), बिपेक (विभीषण), तोतस कन(दशकण्ठ रावण), सदायु(जटायु), सुपन मच्छा(शूपर्णखा), मारित(मारीच), इन्द्रचित(इन्द्रजीत/मेघनाद), फ्रा पाई(वायुदेव) इत्यादि थाई राम कियेन में हनुमान की पुत्री और विभीषण की पत्नी का नाम भी है, जो यहाँ के लोगों से बातचीत करने पर पता नही चल पाया।

हालांकि यहाँ बौद्ध धर्मावलम्बी बहुसंख्यक हैं, व हिन्दु अल्पसंख्यक, उसके बावजूद भी यहाँ चहुं ओर साम्प्रदायिक सद्भाव के ही दर्शन होते हैं। यहाँ बौद्ध भी कुछ हिन्दु देवताओं को मानते व पूजते हैं। नामों से भाषाई अंतर अवश्य ही दृष्टिगोचर होता है, वह इस प्रकार है।

राईसुअन ईश्वन (ईश्वर शिव), रानाराइ (नारायण) राराम (विष्णु), ब्रह्म (ब्रह्मा), राइन (इन्द्र), राआथित् (आदित्य/सूर्य), पाय

(पवन/वायु)। यहाँ मान्यताओं में भी कोई विशेष प्रथकता दृष्टिगोचर नहीं हुई।

यहाँ थाई संसद के सामने गरूड़ बना हुआ है, वही गरूड़ पक्षी जो कि भारतीय पौराणिक ग्रन्थों में भगवान विष्णु का वाहन माना गया है। चूंकि राम विष्णु के अवतार हैं और थाईलैण्ड के राजा राम के वंशज हैं और बौद्ध अनुयाई होने पर भी हिन्दु धर्म पर अटूट आस्था रखते हैं। अतः यहाँ गरूड़ को राष्ट्रीय चिन्ह घोषित किया हुआ है। इस तरह हमने पाया कि यहाँ कि धार्मिक मान्यताओं में भी काफी कुछ साम्य है। यहाँ हम भ्रमण के दौरान जिस-जिस भी होटल में ठहरे वहाँ सभी जगह हमने पाया कि यहाँ छोटा सा मंदिर होटल की परिसीमा में बना हुआ है।

जहाँ ईश्वर के प्रति आस्था का प्रतीक दीपक/अगरबत्ती मौजूद होती थी, साथ ही प्रशाद स्वरूप उस होटल में सवेरे जो कुछ भी भोजन बना होता है, उसका वहाँ भेाग लगा हुआ देखा। बड़ा आश्चर्य भी हुआ कि हिन्दुस्तान के होटलों में हमने इस परम्परा के निर्वहन को नहीं पाया। या हो सकता है हम यहाँ जिस-जिस होटल में ठहरे हों वहाँ यह व्यवस्था न हो। क्योंकि हिन्दु परम्परा में ईश्वर को प्रथम भोग हृदयतल की गहराईयों से स्वीकारा ही जाता है। पर हाँ यह सच है, कि थाई धरती पर इस परम्परा के निर्वहन को देखकर आत्मीय प्रसन्नता का आभास हुआ।

यहाँ के अभिवादन प्रारूप में बड़ा साम्य लगा। आगंतुक के मिलने पर यहाँ भी ठीक तवादिकोप (नमस्कार) कहने की परम्परा है। यहाँ संवैधानिक राजतंत्र है और यहाँ लोग भगवान स्वरूप में ही अपने राजा रानी को पूजते हैं। कारण कि यहाँ भगवान श्रीराम के वंशजों का ही साम्राज्य रहता आया है। अतः वे सभी ईशतुल्य रूप में ही यहाँ कि जनता को स्वीकार्य है। यहाँ कई जगहों पर वर्तमान राजा (श्रीराम) की तस्वीरें सम्मानजनक रूप में लगी हुई दिखाई

दी। हर जगह पुष्प हार व धूप/अगरबत्ती को इश अराधना के रूप में पाया। जिसने हिन्दुवाद होने का संकेत दिया।

थाईलैण्ड को पहले सियाम देश के नाम से जाना जाता था। इस देश पर कभी किसी का कब्जा नहीं रहा। स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में आज भी इसकी पहचान कायम है। हो सकता है यही कारण हो कि यहाँ श्रीराम का वर्चसव चिरकाल से निरंतर बना रहा। हिन्दुस्तान को तो अंग्रेजों की गुलामी का देश लम्बे समय तक झेलना पड़ा है। अतः स्वाभाविक रूप में यहाँ की कुछ परम्पराओं का लोप व कुछ परम्पराओं में परिवर्तन, कहीं विकासवादी परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। थाईलैण्ड पुरातन काल से ही स्वतन्त्र राष्ट्र रहा है। यही कारण है कि यहाँ परम्पराओं का पालन भी पूर्ण शिद्दत से होता दिखाई दे रहा है, व इसका नाम भी इसी आधार पर पड़ा। थाई अर्थात् स्वतन्त्र, लैण्ड मतलब भूमि। इस तरह से स्वतन्त्र भूमि थाईलैण्ड कहलाने लगी।

यही स्वतन्त्रता यहाँ के रहन-सहन, व्यवहार में भी दिखाई दी। स्त्री पुरूष के कार्यों में भी कोई लैंगिक विभेद नहीं दिखाई दिया। शहरों में घूमने पर पाया कि यहाँ स्त्रियाँ पूर्णतः आत्मनिर्भर है। छोटी-मोटी मजदूरी हो, मालवाहक गाड़ी चलाना हो, मध्यम किस्म की दुकानदारी हो या विशाल व्यापारिक कार्य सभी जगह यहाँ स्त्रियों का वर्चस्व ही दिखाई दिया। इससे यह बात भी स्पष्ट हुई कि यहाँ सर्वत्र साक्षरता का ही डंका बज रहा है। ''सा विद्या या विमुक्तये'' अर्थात् विद्या विमुक्ति/स्वतन्त्रता प्रदान करती है। यहाँ स्पष्टतः दृष्टिगोचर हुआ। यहाँ कामगारों का सुशिक्षित व्यवहार बरबस ही आकर्षित करने वाला रहा। सच ही है, धरती पर प्राकृतिक सौंदर्य और मानवीय सद्व्यवहार का कहीं कोई सानी नहीं। शायद यही कारण है, कि विश्व के पटल पर पर्यटन उद्योग यहाँ तीव्र गति से फल-फूल रहा है।

पर्यटन के दौरान थके शरीर को आराम देने हेतु आवश्यक मालिश यहाँ मसाज पार्लरों में उपलब्ध है। तरह-तरह के फूलों के अर्क, अनेकानेक जड़ी बूटियों युक्त सुगंधित तेलों से मालिश साथ ही विशिष्ट एक्यूप्रेशर बिन्दुओं पर दबाव द्वारा की जाने वाली मालिश यहाँ की प्रमुख विशेषताओं में से एक है। यहाँ के प्रत्येक शहर में अधिकतम स्थानों पर बड़ी ही सहजता से यह उपलब्ध है। थाईलैण्ड की आर्थिक व्यवस्थाओं में मसाज पार्लर प्रमुख आय स्त्रोत में से एक है।

यहाँ की ग्रामीण महिलाओं ने हस्तकला उद्योग में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त की है, यहाँ कि महिलाओं के कृषि कार्य के साथ ही कपास एवं सिल्क की हस्तकला सामग्री व वस्त्र निर्माण कर यहाँ की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ता प्रदान करने में विशेष भूमिका निर्वाह की है। यहाँ के हस्त निर्मित कपास व सिल्क के वस्त्र व्यावसायियों की विशिष्ट मांग रहते हैं। यहाँ के समाज में महिलाओं की सुदृढ़ स्थिति होने का यह प्रमुख कारक है।

यहाँ की कानूनी/संवैधानिक व्यवस्थायें भी स्त्री-पुरूष समता व राष्ट्र विकास में सहयोगी भूमिका का निर्वहन करती है। यहाँ की कानूनी व्यवस्था स्त्रियों के स्वतन्त्र व्यक्तित्व की पक्षधर है। विवाह रूपी सामाजिक संस्था इन्हें उपनाम को इच्छित बनाए रखने की स्वतन्त्रता देता है। यहाँ अपने नाम के साथ माता-पिता या माता/पिता के उपनाम जैसी कोई बाध्यता नहीं है, जो कि यहाँ की स्थितियों द्वारा किये जाने वाले कार्यों को सकारात्मक प्रगतिवाद प्रदान करती है।

विश्व के प्रमुख पांच अग्रिम राष्ट्रों में थाई महिलाओं की स्थिति 2016 के शोध आधार पर वरिष्ठ प्रबंधक अधिकारी (CEO) के रूप में काफी उच्च स्थान प्राप्त हैं। विश्व में जहाँ वरिष्ठ प्रबन्धक महिलाऐं कुल 24 है। यहाँ थाईलैण्ड जैसे छोटे से राष्ट्र में यह आंकड़ा 37 है, जो कि विश्व के उद्योग जगत में बड़ी अहमियत

रखता है। व विश्व स्तर पर थाई महिलाओं को सम्मानजनक स्थान प्रदान करता है। यहाँ के परिवारों व समाज में महिलाओं के निर्णयों की बड़ी अहमियत स्वीकारी जाती है। परिवार, समाज, शिक्षा, राष्ट्र विकास, आर्थिक विकास जैसे विशिष्ट मुद्दों पर थाई महिलाओं की अग्रणी भूमिका सदैव प्रथम पायदान पर रहती है। भारतीयों को इससे सीख अवश्य ही लेनी चाहिए।

अंतर्राष्ट्रीय साहित्यिक सम्मेलन में अनेक वार्ताकारों ने अपने विचार रखे। जिससे हमारे दिमाग की अनेकों खिड़कियों को खुलने का अवसर प्राप्त हुआ था, पर यहाँ सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात यह कि - थाईलैण्ड में महिलाओं की मजबूत स्थिति व उनके प्रति व्यवहार देख कर दिमाग के ज्ञानचक्षु द्वार स्वतः ही खुल गए। सम्मेलन में वैश्वीकरण और हिन्दी भाषा की विकास यात्रा को डॉ. आरती झा ने स्पष्ट किया, तो डॉ. गणेश कौशिक ने हिन्दी की विश्वस्तरीय यात्रा पर प्रकाश डाला। डॉ. महेन्द्र ठाकुर अपनी सारगर्भित चुटीली व्यग्यं रचनाओं से सभी को गुदगुदाते हुए दर्पण दिखाते रहे। जिसे समस्त संभागियों ने सराहा। डॉ. शिवानन्द कामड़े ने हिन्दी सिनेमा में छत्तीसगढ़िया के योगदान को हमारे सम्मुख रखा। वैश्वीकरण के इस युग में हिन्दी की भूमिका पर हमने भी कुछ कसीदे काढ़े। जिसे यहाँ उपस्थित प्रबुद्ध वर्ग ने तहेदिल से स्वीकारा व सराहा।

डॉ. जे.के. डागर, बीना क्षत्रिय जी ने भी हिन्दी भाषा की दशा व दिशा पर अपने सारगर्भित विचार रखे डॉ. युक्ता राजश्री व डॉ. तृशा शर्मा ने भी अपने विशिष्ट विचारों से कार्यक्रम को ऊँचाईयाँ प्रदान की। वीणा गौतम, सनोज कु. तिवारी, निशा गुप्ता, संध्या श्रीवास्तव, महेश चौरसिया, रमेश चौरसिया ने भी शानदार वैचारिक समां बांधा, राजेन्द्र मौर्य, मंजू पांडेय, ने पुस्तकों के विमोचन में प्रमुख भूमिका अदा की। उर्मिला देवी ने विशिष्ट

साहित्यिक कलेण्डर का विमोचन करवाया। काजल मुले ने अपने नृत्य द्वारा कार्यक्रम को मनोरंजन रूप प्रदान किया।

कार्यक्रम का सत्रारम्भ जहाँ संदीप तिवारी राज ने किया वहीं ग्लोबल गांव की हिन्दी (हिन्दी साहित्य संस्कृति के अन्तर्राष्ट्रीय प्रभाव के संदर्भ में) का अंत, आभार प्रदर्शन के साथ डॉ. सुधीर शर्मा ने किया। श्री उद्योप्रसाद साहू, पुरूषोत्तम वर्मा, जयपाल सिंह, चैन सिंह इत्यादि ने अलंकरण समारोह में सहयोगी भूमिका का निर्वाह किया। कुल मिलाकर संदीप तिवारी व डॉ. सुधीर शर्मा ने मिलकर एक यादगार कार्यक्रम हिन्दी भाषा के वर्चस्व को सुस्थापित करने हेतु थाई धरती पर आयोजित किया। भारतीय भोजन व्यवस्था नवीन जी द्वारा हमेशा ही शानदार की गई थी। सुस्वादु अपने घर जैसा भोजन परदेश में मिल पाना भी बड़ा ही सुकुनदायक रहा। भ्रमण के दौरान वाल्वो बस में निरंतर विभिन्न विषयों पर वैचारिक सत्र तो कभी काव्य गोष्ठी कभी गीत संगीत गज़ल हृदय के तारों को निरंतर झंकृत करती रही।

प्रमुखतः यहाँ थाई भाषा ही प्रयुक्त होती है। बैंकांक जैसे बड़े शहरों में कहीं-कहीं अंग्रेजी का प्रयोग भी किया जाता है, हिन्दुस्तानियों को भाषागत समस्या आना स्वाभाविक ही है। पर हमारे टूर में गाइड के साथ रहने से यह समस्या भी हमारे लिए विशेष मुसीबत पैदा न कर पाई गाईड पूरी ताकत लगा ही देती थी, हमें समझाने में उसके हावभाव से ही हम काफी कुछ समझ जाते थे। वैसे उनकी थाई भाषा अथवा थाई प्रभावित अंग्रेजी समझ पाना हमारे बस का रोग नहीं था। इसके बावजूद भी हमने पाया कि यहाँ पर्यटन उद्योग बड़े पैमाने पर फल-फूल रहा है। ऐसा माना जाता है, कि थाइलैण्ड में सात पोषित इच्छाओं/आकांक्षाओं की आपूर्ति बड़ी ही सहजता से हो पाती है। सहज उपलब्धता ही यहाँ कि विशिष्ट विशेषता है। मंदिरों की बहुलता भी इस जगह की

प्रमुख विशिष्टता है। हमने अपना भ्रमण कार्य भी यहीं से प्रारम्भ किया-

वाट अरूण (डान का मंदिर)-यह बैंकाक का प्रसिद्ध व अद्भुत दर्शनीय स्थल है। इसकी विशिष्ट छटा/आभा सूर्यास्त के समय निराली होती है। यह प्रतिदिन प्रातः 8:30 से सायं 5:00 बजे तक दर्शनार्थियों हेतु खुला रहता है।

वाट बेनचमा बोफिट (संगमरमर मंदिर)- यह यहाँ की इटेलियन मार्बल से निर्मित बेहद खूबसूरत मंदिर है। यहाँ भी प्रातः 8:30 से सायं 5:00 बजे तक दर्शनार्थियों का तांता लगा रहता है।

वाट क्रा केऊ (बेशकीमती अनमोल बुद्ध का मंदिर)- यहाँ के विशिष्ट व बेहद आकर्षक मंदिरों में से एक है। यह काफी बड़े भू-भाग पर भव्य महलनुमा स्वरूप में अवस्थित है। यहाँ भगवान बुद्ध की भव्य प्रतिमा स्थापित है। यहाँ मंदिर के परिसर में बेहद खूबसूरत व निराले दृश्य दिखाई पड़ते हैं। मंदिर में स्त्री-पुरूष विशिष्ट वेश-भूषा धारण करके ही प्रवेश करते हैं। जिसमें शरीर के पूरे अंग ढके हुए होते हैं। अंग प्रदर्शित करते वस्त्र यहाँ प्रवेश हेतु मान्य नहीं है। प्रातः 8:30 से दोपहर 3:30 तक ही यह मंदिर दर्शनार्थियों हेतु खुलता है।

वाट फो (शयन मुद्रा में बुद्ध)- यहाँ भगवान बुद्ध की विशाल मूर्ति है, जिसका आकार 46 मीटर लम्बा व 15 मीटर ऊँचा है। यह स्वर्ण मूर्ति शयन मुद्रा में है, यह स्थान थाईलैण्ड के रतनकोसिन आइसलैण्ड में अवस्थित है। यह प्रातः 9 बजे से सायं 5 बजे तक श्रद्धालुओं हेतु खुला रहता है। यहाँ श्रद्धा और भक्ति के साथ ही सुप्रसिद्ध थाई मसाज का आनंद भी लिया जा सकता है, व प्रशिक्षण भी प्राप्त किया जा सकता है अर्थात् यहाँ पारम्परिक थाई मसाज का प्रशिक्षण केन्द्र भी है।

फ्रा फ्रोम इरवन श्राईन (चतुर्मुखी ब्रह्मा मंदिर) - यहाँ हिन्दु मान्यताओं के अनुसार सृष्टि के रचियता ब्रह्मा जी की मूर्ति

स्थापित है। ब्रह्मा जी के चार मुखी स्वरूप के यहाँ दर्शन लाभ प्राप्त होते हैं। इसे ताओ महा प्रोम भी कहा जाता है। यहाँ कि पारम्परिक मान्यताओं के अनुसार ब्रह्मा जी दयावान, सुकोमल हृदय युक्त, भेदभाव रहित, क्षमा दान करने वाले देवता है। अतः यह स्थान श्रद्धालुओं से हमेशा भरा रहता है, जबकि मंदिर के पट प्रातः 8 से सायं 7 बजे तक ही खुलते हैं।

यह मन्दिर ग्रांड हयात इरवन होटेल के सामने 1956 में स्थापित हुआ था। पुरातन मान्यताओं के अनुसार यहाँ सृष्टि के रचियता ब्रह्मा जी चारों दिशाओं में जीवित व भौतिक सृष्टि में सम्मिलित समस्त तत्वों पर नजर रखते हुए है, व उनकी रक्षा करते हैं। यहाँ श्रद्धालु परम्परात स्वरूप में पुष्प हार, 16 अगरबत्तियाँ, 4 मोमबत्तियाँ व स्वर्णिम पत्तियों की चादर चढ़ाते हैं।

त्रिमूर्ति श्राईन (ब्रह्मा विष्णु महेश) - त्रिदेव मंदिर- यह सेन्ट्रल शापिंग कॉम्प्लेक्स में स्थापित है। जो कि बहुत बड़े भू-भाग पर फैला हुआ है। यहाँ ब्रह्मा, विष्णु, महेश प्रतिकात्मक तीन खम्बे आस्था का केन्द्र है। यहाँ की पूजन सामग्री में मुख्यतः लाल रंग के पुष्प, अगरबत्तियाँ व मोमबत्तियाँ प्रयुक्त होती हैं। पुरातन मान्यताओंनुसार यहाँ श्रद्धालु लाल रंग के वस्त्रधारण कर लाल रंग के पुष्प लेकर जाते हैं। अपने जीवन में स्थायी प्रेम की अभिलाषा में।

गणेश श्राईन (गणपति मंदिर) - यह त्रिमूर्ति श्राईन के पास ही स्थापित है। यहाँ भी इन्हें संकट मोचन व रिद्धी-सिद्धी के दाता स्वरूप में ही स्वीकारा जाता है। कला संस्कृति के दाता विघ्नहर्ता, प्रथम पूज्य स्वरूप में ही स्वीकारा जाता है। ताजे पुष्प, पुष्पहार, केले, गन्ने व गन्ने का रस भोग स्वरूप चढ़ाए जाते हैं। गोडेस लक्ष्मी स्टेच्यू (लक्ष्मी मंदिर) - यह मंदिर गोर्सोन प्लाजा की चौथी मंजिल पर स्थापित है। लक्ष्मी जी को विष्णुप्रिया पत्नी धन

की अधिष्टात्री देवी स्वरूप में ही पूजा जाता है। सिक्के, कमल पुष्प, गन्ने व गन्ने का रस चढ़ाया जाता है।
बैंकाक में राचा प्रासोंग जंक्शन हिन्दु धर्म का प्रमुख धार्मिक केन्द्र हैं। जहाँ हिन्दु देवताओं के मंदिरों के मध्य एकमात्र दैवी मंदिर यह लक्ष्मी मंदिर ही है।

नारायण स्टेच्यू (नारायण मंदिर) - यह मंदिर इंटरकोन्टि नेन्टल होटेल के सामने स्थित है। पुरातन मान्यताओं स्वरूप नारायण भगवान भक्तों के व्यवसाय को कुदृष्टि व बुरी आत्माओं के प्रकोप से सुरक्षित रखते हैं, व भक्तों के प्रतिदया दृष्टि रखते हैं। यहाँ भक्त पीले रंग के पुष्प यथा गेंदे के पुष्पहार थाई मिठाई व स्थानीय वस्त्र चढ़ाए जाते हैं।

इन्द्र स्टेच्यू (इन्द्र देवता) - इन्द्रदेव का यह मंदिर एमरिन प्लाजा में स्थित है। यहाँ इन्द्र देवता बौद्ध धर्म के संरक्षक स्वरूप में मान्य है, व सांसारिक अच्छाईयों के व देखभाल करने वाले स्वरूप में पूजनीय है। हाथी आपका प्रिय सारथी है। यहाँ छोटे हाथी स्वरूपा पुष्प/पदार्थ व गेंदे के पुष्पहार चढ़ाए जाते हैं। यहाँ 2013 में बेहद खूबसूरत तांबे की मूर्ति (इन्द्र देवता) प्रतिष्ठापित की गई है। मंदिरों के दर्शन पश्चात् हमने यहाँ के महलों की तरफ कदम बढ़ाए।

रॉयल पैलेसेस (भव्य महल)- यहाँ दो प्रकार के भव्य महल हैं-
(1) द ग्रेंड पैलेस
(2) विमानमेक पैलेस।

(1) द ग्रेंड पैलेस:- यह बैंकाक के मध्य में फ्रानाकोन डिस्ट्रिक्ट में मौजूद है। 1700 ईस्वी से यह स्थान सियाम के राजाओं का राजगृह (राजमहल) रहा है। इसकी बनावट बेहद भव्य, आकर्षक व शानदार है। यह सवेरे 8:30 बजे से 3:30 बजे तक पर्यटकों हेतु उपलब्ध रहता है। यहाँ निरंतर पर्यटकों का तांता लगा रहता है। यहाँ प्रवेश हेतु स्त्री पुरूष को यथोचित परिधान

धारण करना अनिवार्य है। गरिमामय परिधान के बगैर यहाँ प्रवेश निषेध है।

(2) विमानमेक पैलेस (बादलों में महल):- यह दूसित पैलेस कॉम्प्लेक्स में स्थित है, यह भव्य महल गोल्डन टीक लकड़ी से निर्मित हैं। अनूठी बात यह है, कि यहाँ निर्माण के दौरान एक भी कील का प्रयोग नहीं हुआ हैं। इस महल में अनेकों आकर्षक व दुर्लभ वस्तुओं का भण्डार है, जो इसके सौन्दर्य को द्विगुणित कर देता है। प्रातः 8:30 बजे से दोपहर 4:30 बजे तक यहाँ पर्यटकों की आवा-जाही बनी रहती है।

म्यूजियम:- यह एशिया के बड़े भव्य समृद्ध म्यूजियम्स में से है, यह सनम लुआंग के आगे नाफ्रशाट रोड पर मौजूद हैं। यहाँ थाई संस्कृति को प्रदर्शित करते दृश्य, कलाकृतियाँ, वस्तुऐं प्रदर्शित की गई है। सवेरे 9 बजे से सायं 4 बजे तक खुला रहता है, व सोम एवं मंगलवार सहित सार्वजनिक अवकाशों पर बंद रहता है। यहाँ अनेकों कलाकृतियाँ हैं, जो बौद्ध धर्म के ऐतिहासिक महत्व को प्रदर्शित करती है, जिससे मंत्रमुग्ध हुए बिना नहीं रहा जा सकता।

वैसे तो म्यूजियम की क्या कहूँ वहाँ की साफ-सुथरी सड़कों का सौन्दर्य, वहाँ का सुव्यवस्थित ट्रेफिक, चौराहों पर ट्रेफिक पुलिस को मुस्तैदी से खड़ा रह यातायात नियंत्रित करने हेतु उपलब्ध सुविधाऐं सभी कुछ मुग्ध कर ही रही थीं। चौराहों पर ही सड़क के किनारों पर ट्रेफिक पुलिस के विश्राम काल में विश्राम हेतु दो-दो कुर्सियाँ जिन पर यथोचित शेड लगा हुआ था। दिखाई पड़ी, समझ में आया कि मानवीय संसाधनों का सदुपयोग भौतिक संसाधनों की आपूर्ति व व्यवस्थाओं पर भी निर्भर है।

बैंकाक की सड़कों पर एक साथ एक दूसरे के ऊपर नीचे 7-8 पुलों को भी देखा। राहगीर आपनी दिशानुसार बड़ी सहजता से भीड़-भाड़ वाले इलाकों में चलते दिखाई दिये। सड़क जाम की

संभावनाऐं ही यहाँ दम तोड़ती नजर आई। नगर निगम की सूझ-बूझ व कार्यप्रणाली को सादर नमन।

हमें यहाँ प्राकृतिक सुन्दरता से भरपूर क्षेत्र फुकेट भ्रमण का अवसर भी प्राप्त हुआ। यह दक्षिणी थाईलैण्ड क्षेत्र अंडमान सागर में एक मुख्य दीप और कुछ अन्य द्वीपों के समूह का संगठित प्रान्त है। यहाँ मुख्यतः करोन बीच, पटोंग व फैंटा सी देखने लायक जगह है। बैंकाक से थाईलैण्ड के दक्षिणी सिरे पर स्थित फुकेट की दूरी करीब 860 किमी. है, जहाँ विमान द्वारा हम पहुँचे।

वैसे यहाँ के समुद्री बीच विश्व स्तरीय सौन्दर्य से घनीभूत है। सफेद मिट्टी, लम्बे-लम्बे पाम ट्री, उफनता समुद्र व प्यारा सा शहर सभी कुछ सुन्दर, लुभावना, व रोमांटिक सा नजर आता है। समुद्री किनारों पर खेले जाने वाले अधिकतम खेल यहाँ उपलब्ध हैं। पाम ट्री के बीच से पहाड़ी धुंधलके के मध्य खूबसूरत सी समुन्दरी लहरों से उठखेलियाँ करता, सूर्यास्त का दृश्य बड़ा ही मनोरम सा लगता है। मचलती समुद्री लहरों के साथ समय का पता ही नहीं चलता। समुद्र से बाहर श्वेत सी मिट्टी झाड़ते वक्त शारीरिक टूटन अवश्य समय देखने को मजबूर करती है। पर तुरन्त ही सड़क किनारे लगी मसाज पार्लरों की कतारें बरबस ही आकर्षित कर सारी थकान घण्टे भर में ही दूर कर देती है। इसके बाद परदेश में अपने घर की रसोई सी सोंधी-सोधी खुशबू वाला भोजन मिल जाना सोने पे सुहागा सा नजर आता है, जो आयोजकों की मेहरबानी से ही सहज संभव हो जाता था।

अगले दिन फुकेट से विमान द्वारा हम क्राबी आइलैण्ड पहुँचे। यहाँ के प्राकृतिक नजारे भी बड़े मनमोहक थे। प्राकृतिक हरितिमा यों लगती है, मानों साक्षात ईश्वर ने अपने हाथों में कूची ले उकेरा हो उसे। पत्तियों की मोटाई आकार, रंग, धनापन सब कुछ अप्रतिम खूबसूरती लिए हुए। नेत्र अपलक निहारते ही रहते हैं। समय कब पंख लगाए उड़ जाता पता ही नहीं चलता।

टैक्सी स्टेण्ड के पास ही सड़क के किनारे बना बड़ा सारा शतरंज बरबस ही आकर्षित कर गया। आहा..... छूकर देखा.... अरे यह तो प्लास्टिक का बना है, राजा, रानी, सिपाही.... सभी कुछ श्वेत शाम रंगों से निर्मित। इंतजार के दौरान जिसे आसानी से खेला जा सके। दिमागी कसरत भी सहजता से हो और निरर्थक इंतजार में व्यतीत होने वाले समय का सार्थक सदुपयोग भी हो जाए वाह क्या बात है। रात्रि भोजन के समय ही अगले दिन जल्दी जागने हेतु चेतावनी प्रदान कर दी गई थी। कारण कि प्रकृति के अनूठे नजारे फी-फी आइलैण्ड का लुत्फ जो उठाना था हमें। प्रातः 7:30 बजे होटल से बस द्वारा समुद्री तट तक पहुँचना जो था। आगामी समुद्री यात्रा हेतु,....!

फी-फी आइलैण्ड छः प्रमुख द्वीपों का एक निराला समूह है। इसमें आकार के दृष्टिकोण से बड़े द्वीप को फी-फी डॉन कहा जाता है। इसका आकार लगभग 9.73 किमी^{2} है। यहाँ तक पहुँचने हेतु चार मंजिला व लगभग 450 सवारियों की बैठक व्यवस्था वाला क्रूज प्रातः 8:30 बजे समुद्र तट से रवाना हो गया था। क्राबी में मराईन रीक्रियेशनल एक्टीविटीज, समुद्री खेल यहाँ सर्वाधिक उपलब्ध है।

खूबसूरत बीच व दूर-दूर तक अथाह समुद्री लहरें साफ सुथरा पानी कहीं शुद्ध हरे तो कहीं नीले रंग का सा आभास। क्रूज का यहाँ अंतिम पड़ाव था क्रूज आगे नहीं जा सकता। अतः हमें यहाँ उतरना ही था। वैसे क्रूज पर बैठते ही जो आत्मीय व्यवहार मिला था, स्वागत सत्कार मिला था। आराम दायक सीटें बाहरी किनारों में समुद्री नीले पानी को आसमां छूते हुए निहारना। क्रूज के पीछे लम्बी चौड़ी श्वेत मखमली चादर का अठखेलियाँ करते हुए दौड़ना, सभी कुछ तो आल्हादित कर रहा था। दैनिक जीवन की नियमित रोजी-रोटी की तलाश वाली आपाधापी भरी दिनचर्या से दूर निष्णांत समुद्र निहारना.... बड़ा ही रोमांचित कर रहा था।

को फी-फी डान द्वीप पर उतरते ही कुछ ही पलों में अन्य नन्हीं-नन्हीं स्पीड बोट किनारे आ लगी। क्रूज के समस्त यात्रियों को यहाँ अपने-अपने गाइड के निर्देशानुसार उनमें अपना स्थान ग्रहण करना था। फिर हम उन स्पीड बोट में चढ़ इण्डियन ओशियन के खूबसूरत द्वीप समूह की सैर को निकल पड़े। यहाँ चहुं ओर समुन्दर को प्रकृति ने सुन्दर-सुन्दर अट्टालिकाओं समुद्री झाग सी सुन्दर चट्टानों से नवाजा हुआ था। कभी लगता यहाँ समुद्र के गले में खूबसूरत सी मणियों की माला पिरोई हुई है। साफ सुथरा पारदर्शी जल आत्मिक सा साफ सुथरी सी झलक दे रहा था जिसने शरीर रूपी चोला पहनते ही कितनी गंदगी जमा कर ली है। ठीक यही निष्च्छल आत्मा सा समुद्र समाज व सामाजिक व्यवस्थाओं से दूर होने पर कितना निर्मल कोमल लग रहा है। जहाँ अगले पल का कोई इंतजार नहीं, कोई भरोसा नहीं, समय का, कब यहाँ अपनी उल्टी चादर ओढ़ ले।

यहाँ कभी-कभी डर भी लगता था। (अकाल्पनिक मौत का) फिर हमारी बोट आकार के आधार पर दूसरे बड़े द्वीप को फी-फी ले पर आकर रूकी। यह लगभग 2 किमी तक फैला हुआ है। यहाँ बच्चों युवाओं और चिरयुवाओं ने समुद्री ऐतिहातन वस्त्र (लाईफ जैकेट) पहन समुद्र में छलांगे लगाई। शेष बोट पर खड़े अपने परिजनों को समुन्दर में मछलियों सी अठखेलियाँ करते निहारने लगे। कुछ माएँ ईश स्मरण में जुट गई अपने परिजनों की सुरक्षा की अपेक्षा में। हमने देखा कुछ महिलाऐं नाव पर बैठे-बैठे हाथ जोड़ आँखें बंद कर अपने-अपने ईष्ट को याद कर मंत्रोच्चारण कर रही थीं।

कभी-कभी समुन्दर की भयावयता भी भीतर ही भीतर भय का कारण बन रही थी। जहाँ नन्हें-नन्हें बालक समुन्दर में छलांग लगाने को मचल रहे थे, वहीं एक बालिका अपने पिता को समुन्दर में छलाग लगाते देख सिहर उठी और जोर-जोर से रोने चीखने

चिल्लाने लगी उसके पिता के वापस बोट पर लौटकर आने तक उस मासूम कली का भयाक्रांत हो रोना चीखना जारी रहा। पिता के गले लगने पर ही उसके आँसू थमें व रूकी हुई सांसे सामान्य हो पाई।

बोट पर से ही हमने अन्य प्रमुख द्वीपों बिडा नोक, बिडा नोई, बेम्बू आइलैण्ड जिसे को मेई फेई भी कहा जाता है। व को यंग की खूबसूरती को निहारा सभी कुछ फिल्मी परिदृश्य सा नजर आ रहा था और सच भी है हमारी हालीवुड, बॉलीवुड की बहुत सी फिल्मों में यहाँ के खूबसूरत दृश्यों का फिल्मांकन भी किया गया है। प्रकृति की अप्रतिम सुन्दरता को फिल्मी परदे से पृथक् वास्तविक स्वरूप में देखना एक-एक पल को उस प्राकृतिक सौंदर्य के मध्य जीना बड़ा ही रोमांचकारी सा महसूस हो रहा था। समुन्दर में इनके अलावा भी और छोटे-छोटे टापुनुमा द्वीप भी है। समुद्री उतार-चढ़ाव के अन्जाने भय ने हमें वहाँ न पहुँचने दिया वैसे तो बिडा नोई, बिडा नोक को मेई फेई, को यंग पर भी आवास-प्रवास की कोई व्यवस्था नहीं है। यहाँ जाना हो तो टेन्ट आदि की व्यवस्था भी स्वयं को ही करनी होती है।

प्राकृतिक आपदा सुनामी ने यहाँ के जन जीवन पर करारा प्रहार किया था। पर उसके बाद भी यहाँ का सौंदर्य व आम जन जीवन बड़ा ही मनोहारी है। 2013 की जनगणना के अनुसार क्राबी की जनसंख्या मात्र 2500 है। प्रकृति ने यहाँ मात्र दो मौसम ही नवाजे हैं। मई से दिसम्बर तक वर्षा ऋतु व जनवरी से अप्रेल तक ग्रीष्म ऋतु छाई रहती है। जुलाई सर्वाधिक नमी वाला माह रहता है तो फरवरी शुष्क माह के रूप में जाना जाता है। सम्पूर्ण फी-फी थाईलेण्ड का आकार भी मात्र 12.25 किमी^{2}. ही है। पर हाँ, यहाँ के सौंदर्य को मापा नहीं जा सकता। यह द्वीप समूह अंडमान समुन्द्र का हीरा भी कहा जाता है। फिल्मांकन के दृष्टिकोण से भी यह सुपरस्टार के रूप में जाना जाता है।

क्राबी ऊष्णकटिबंधीय समुद्र तट दक्षिण का सबसे बड़ा व स्वर्ग सा सुन्दर है। यहाँ पारदर्शी क्रिस्टल सा पानी व श्वेत कोमल सी रेत साथ ही साहसिक समुद्री खेल विशिष्ट व अनूठा रोमांच सा पैदा करते हैं, जीवन में। सितम्बर-अक्टूबर माह को छोड़ जब भी चाहे यहाँ पहुँचों। आनंद ही आनन्द है, सितम्बर अक्टूबर में वर्षा की अधिकता की वजह से प्राकृतिक सौंदर्य द्विगुणित भले ही हो जाता है। मगर घर से दूर सैलानी बन पर्यटन का आनन्द नहीं लिया जा पाता है।

लौटते वक्त को फी-फी डान पर थाई के साथ ही भारतीय भोजन की भी व्यवस्था थी और यहाँ मिठाई के रूप में साबूदाने की खीर मिलना बड़ा ही आश्चर्यजनक था। उस दिन कुछ लोगों का एकादशी का व्रत था, वे तो भाव विभोर से हो गए। कारण कि हिन्दुस्तान में किसी का व्रत हो तो अक्सर ही माएँ साबूदाने की खीर बना परोस देती है। परदेश में जिसकी संभावना ही न थी उसका मिल जाना जेहन में फुरफुरी सी पैदा कर ही देता है। अपनेपन का साया सा महसूस होता है। थकान होने पर दादी-नानी के कोमल हाथों की तेल मालिश सी मालिश यहाँ हर जगह मसाज पार्लरों में उपलब्ध हो ही जाती है।

समुद्री तटों सुन्दर-सुन्दर द्वीप समूहों के अलावा थाइलैण्ड में सफारी वर्ल्ड जू व पार्क भी यहाँ का प्रमुख आकर्षण केन्द्र हैं। यह 1988 में निर्मित हुआ था और इसे दो भागों में बांटकर विकसित किया गया है। बहुत बडे भू-भाग लगभग 480 एकड़ भूमि पर जानवरों के स्वतन्त्रता पूर्वक निर्वाह हेतु स्थान दिया गया है। 180 एकड़ भू-भाग विभिन्न किस्म के पंछियों हेतु रखा गया है। जहाँ दुनिया के अधिकतम स्वस्थ जानवर व पंछी रखे गए हैं। उनके रहने व खाने-पीने, स्वास्थ्य की यहाँ विश्वस्तरीय बेहतरीन व्यवस्थायें हैं।

समुद्री जीवों हेतु भी यहाँ विशिष्ट स्थान व समुचित व्यवस्थायें हैं। इसके अलावा यहाँ विभिन्न जीव-जन्तुओं, जंगली जन-जीवन पर आधारित अनेकों कार्यक्रम भी नियमित व निरंतर किए जाते हैं। जिन्हें बैठकर आराम से देखने की भी स्थायी व्यवस्थायें हैं, बड़ी मेहनत व संवेदनशीलता के साथ ये कार्यक्रम तैयार किये जाते हैं। प्रस्तुति के वक्त जिसका सहज ही एहसास किया जा सकता है। यहाँ अनेकों भोज्य सामग्री व दुर्लभ ऐतिहासिक उपहार सामग्री की दुकानें हैं। यहाँ जानवर स्वतन्त्रता पूर्वक विचरण करते हैं। अतः पर्यटक बंद गाडियों में इन जानवरों के स्वतन्त्र विचरण का आनन्द उठा सकते हैं।

यही कुछ विशिष्ट कारण हैं, जो इसे विश्व प्रसिद्ध बनाते हैं। इसे देखने में सुबह से शाम कब हो जाती है। पता ही नहीं चलता। पर्यटकों को इस स्थान के भ्रमण हेतु पूरा एक दिन सुरक्षित रखना होता है। विभिन्न दुर्लभ प्रजातियों के जंतु जानवरों पंछियो, समुद्री जीवों को एक साथ विशिष्ट करतब करते देखना वास्तव में एक विशिष्ट अनूठा अनुभव है, जो यहाँ सहज प्राप्य हैं। समस्त कार्यक्रम पूर्ण मनोयोग व कटिबद्धता के साथ तैयार किये जाते हैं, जिसमें वहाँ के कार्यकर्ताओं, सरकारी निर्देशों उपलब्ध संसाधनों का तालमेल स्पष्टतः दृष्टिगोचर होता है। यहाँ का प्रवेशद्वार भी बेहद आकर्षक व कलात्मक दृष्टिकोण से समृद्ध है। यहाँ पर्यटकों हेतु समय 10 बजे से 4 बजे तक का रहता है। दोपहर के भोज की व्यवस्था सामान्यतः यहाँ टूर व्यवस्थापकों द्वारा ही की जाती है। यहाँ के समस्त शो अपने सुनिश्चित समय पर ही प्रारम्भ व समाप्त होते हैं। इनकी समय बद्धता काबिले तारीफ है।

यहाँ सी लायन शो एवं डॉल्फिन शो सर्वाधिक प्रसिद्ध है। इसके अलावा भी आरंग उतन, जिराफ फीडिंग, पंछी शो, व जगल

में निवास करने वाले मानव जीवन पर आधारित काऊ बॉय शो भी बच्चों को बेहद पसंद आते हैं। अपने प्रिय पशु को चुम्बन देते हुए फोटो खिंचवना यहाँ आम है। साथ ही शेर के शावक को बोतल से गोद में बिठाकर दूध पिलाते हुए फोटो खिंचवाना भी आम प्रचलन में है। इसके लिए सामान्यतः 400-500 बाथ (थाई मुद्रा) शुल्क अतिरिक्त लिया जाता है। रंगीन पंछियों व वहाँ थोड़ी-थोड़ी दूरी पर निर्मित विशिष्ट कला-कृतियों को निहारना व उन्हें अपने कैमरे में कैद करना विशिष्ट शगल रहता है, पर्यटकों का। यहाँ होने वाला मंकी शो भी बड़ा लुभावना व मजेदार होता है।

सफेद शेर जिसका कि सिर्फ नाम ही सुना था। यहाँ स्वतन्त्र रूप से विचरण करते देखना रोमांच पैदा करने वाला रहा। वैसे इस शानदार स्थान के समस्त प्राणी आकर्षक देह यष्टि के साथ पूर्णतः स्वस्थ नजर आए। जो कि यहाँ के प्राणियों की उचित देखभाल व समुचित आहार व तापमान की स्थिति को दर्शाता है। यहाँ के कार्यक्रम में पंछियों का अनुशासित व्यवहार भी काबीले तारीफ रहा। इन्हें अपेक्षित व्यवहार, क्रियाओं हेतु तैयार करना कितना जूनूनी रहा होगा। कुछ-कुछ अकल्पनीय सा लग रहा है। आयोजकों की सोच योजना, क्रियान्विति में लगी मेहनत का अंदाजा लगाना भी मुश्किल सा हो रहा था। हम सभी दर्शक इससे अभिभूत हुए बिना नहीं रह सके।

यहाँ का प्रत्येक शो अपने आप में अनूठा सा था। फिर चाहे उसमें कुत्ता, बिल्ली, मुर्गी, चिड़िया, मोर, शेर, सियार, जिराफ, बंदर, भालू, हाथी कोई सा भी घरेलु या जंगली प्राणी क्यों न हो। कार्यक्रम बहुत बेहतरीन थे। मात्र ऐसा ही नहीं वरन् उन कार्यक्रमों को तैयार करने में कितनी मेहनत लगी होगी? यह वाक्य भी हर दर्शक की जुबां पर था। आज भी उन दृश्यों को याद करते हैं, तो

एक रोमांचकारी अनुभव सहज ही नेत्रों के आगे अठखेलियाँ करने लगता है।

वास्तव में थाई मनोरंजन का कहीं कोई मुकाबला ही नहीं। इसमें प्राकृतिक ही नहीं सामाजिक कसीदाकारी भी शामिल है। इस यात्रा को कलमबद्ध करने के दौरान आज 09 फरवरी 2019 को दैनिक भास्कर समाचार पत्र में एक विशिष्ट समाचार पढ़ने को मिला, कि यहाँ के राम राज्य को भी किसी की नजर लग गई। इस बार राम राज की वैभवशाली परम्परा को तोड़ते हुए मार्च 2019 में प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार के रूप में थाइलैण्ड के पूर्व राजा भूमिबल अतुल्यदेज की बेटी और मौजूदा राजा महा वाजिरलोग्कोर्न की बड़ी बहन राजकुमारी उबोलरत्ना थाई राक्सा चार्ट पार्टी से नामित की गई है। आगे की स्थिति वक्त आने पर पता लगेगा।

थाईलैण्ड में क्राबी, फुकेट के अलावा पटाया भी बेहद खूबसूरत व आनन्ददायी जगह हैं। हालांकि हमारे समूह के कुछ ही सदस्य वहाँ पहुँच पाए थे। बैंकाक से लगभग 170 किमी दूर थाइलैण्ड की खाड़ी के पूर्वी तट पर पटाया है। पिछली सदी के साठ के दशक में यह महज मछुआरों का एक गांव हुआ करता था। अप्रेल 1961 में वियतनाम के खिलाफ अमेरिकी जंग में हिस्सा लेने वाले लगभग सौ सैनिकों का जत्था यहाँ आराम करने के लिए आया था। तभी से यह पर्यटन स्थल के रूप में अपनी धाक जमाने लगा। अब फुकेट की ही तरह यह भी दक्षिण पूर्वी एशिया के सबसे पंसदीदा पर्यटन स्थलों में से एक है। एक अनुमान के अनुसार यहाँ हर साल पांच लाख के लगभग पर्यटक आते हैं।

बचपन से घर पर अक्सर पापा-मम्मी से, शिक्षकों से सुना था कि जब बच्चे पढ़ाई लिखाई छोड़ इधर-उधर भटकने लग जाते

थे, वे डांटते हुए बोलते थे। पढ़ाई में मन लगता नहीं बार-बार तफरीह मारने बाहर पहुँच जाते हो। यह तफरीह मारना शब्द का सीधा सादा अर्थ यहाँ पहुँचने पर समझ आया। वास्तव में यहाँ पर्यटकों को मस्तीभरी काल्पनिक दुनिया वास्तविकता में उपलब्ध होती है।

पटाया हर किस्म के पर्यटक हेतु जन्नत है। वैसे तो पूरा थाइलैण्ड ही विशिष्ट अनुभूतियों से भरा स्वर्ग का सा अहसास करवाता है। किंतु पटाया वह जगह है, जहाँ सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक मात्र ही नहीं पूरी रात का मनोरंजन अथाह मस्ती मौजूद है। हाथी की सवारी हो, ऑटोमैटिक मिनी बाईक या भारी भरकम क्रूज बाइक या फिर बहुरंगी कनवर्टिबल जीपों पर हाथ आजमा सकते हैं। हवाई खेलों व पानी से जुड़ी तमाम गतिविधियों के साथ आकाश से पाताल तक का रूहानी मनोरंजक सफर यहाँ किया जा सकता है। कुछ ऐसा न भी करना चाहें तो यहाँ प्रकृति के करीब रहस्यमयी अलौकिक आनन्द प्राप्त करना भी सहज ही है।

यहाँ की रात्रिकालीन जीवनशैली सर्वाधिक प्रसिद्ध है। इतनी प्रसिद्ध कि प्राकृतिक अकूट सौन्दर्य उसके सामने गौण हो जाता है। शायद उसके पीछे कानूनी मान्यता होना, उसे वैध मनोरंजन में सम्मिलित होना अधिक सशक्त प्रसिद्धि दिलवा पाता है जो कि अन्य देशों के साथ ही हिन्दुस्तान में भी चोरी छिपे, गैर कानूनी स्वरूप में डरते-छिपते ही उपलब्ध हो पाता है। यहाँ अन्य मनोरंजक क्रीड़ाओं के समान ही यौन क्रीडाऐं भी सहज व कानूनी मान्य स्वरूप में उपलब्ध है। जो कि यौन पिपासु स्त्री-पुरूषों को सहज आसान एवं समान अवसर प्रदान करवा जाती है। यही इसके नामी/बदनामी होने का प्रमुख कारकों में से एक है। यह जादू

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - डॉ. चेतना उपाध्याय
जन्म - 14.06.1966, अजमेर
पति - श्री अनील कुमार उपाध्याय
शिक्षा - एम.एस.सी. बाल विकास, पी.एच.डी., बी.एड.
ईमेल -chetnaupadhyay14@gmail.com
मो. - 9828186706
कार्यक्षेत्र - वरिष्ठ व्या. (समकक्ष प्रधानाचार्य) जिला शिक्षा प्रशिक्षण संस्थान, मसूदा, अजमेर (राजस्थान)

प्रकाशन एवं उपलब्धियाँ :-

1. कहानी, कविताएं, आलेख, शोधालेख आदि निरंतर प्रकाशित।
2. सूक्ष्म गहनानुभूति, अंतरा शब्द शक्ति प्रकाशन।
3. रिक्त आकाश (कहानी संग्रह), 4. काव्य सुमन (काव्य संग्रह)
5. बालकों की अदालत (बाल कविता संग्रह)

डाक्युमेन्ट्री निर्माण - 1. अक्षरो की फसल (प्रारंभिक अक्षर ज्ञान),
2. अक्षरों की फसल (भारतीय अंक ज्ञान)
3. दसवी कक्षा पश्चात् विषय चयन पर मार्गदर्शन

एन.सी.ई.आर.टी. दिल्ली द्वारा बाल फिल्म हेतु राष्ट्रीय अवार्ड
अंतर्राष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल जयपुर मे बेस्ट डायरेक्टर अवार्ड
अंतराष्ट्रीय क्राबी महोत्सव थाइलैंड में भारत भास्कर अवार्ड
अंतराष्ट्रीय बाल साहित्य गौरव रत्न प्राप्त
अंतराष्ट्रीय सैंड ड्यून फिल्म फेस्टिवल में फिल्म प्रसारण
अंतराष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में शोधालेख प्रकाशित
बाल कविता संग्रह काव्य सुमन, कहानी संग्रह रिक्त आकाश
एस.आई.ई.आर.टी द्वारा प्रकाशित तीन पुस्तकों में लेखन
30 राष्ट्रीय संगोष्ठियों में पत्र वाचन, 25 राष्ट्रीय सम्मान
राज्य स्तरीय संदर्भ व्यक्ति (संस्था प्रधान) लीडरशीप राजस्थान
अंतराष्ट्रीय लायन 3233ई2 रीडिंग एक्शन सभापति।
अंतरा शब्द शक्ति सम्मान 2019।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-86666-76-5
मूल्य 60/-